अभिनंदन गुरु जी महाराज

(भजन रचयिता - डॉ यतेंद्र शर्मा)

मोहे आज बचालो मेरे गुरु, जराय मुझे यह दावानलन।
ना सूझे कोई मार्ग प्रभु, भटकाय रही यह आवानलन॥
मोहे आज बचा लो मेरे गुरु, जराय मुझे यह दावानलन...

संसार घना जंगल है गुरु, अंधकार छुपाए पाथागन।
चहु ओर दिखें हैं वेग पशु, ना ठोर दिखे है बाचावन्॥
मोहे आज बचा लो मेरे गुरु, जराय मुझे यह दावानलन...

दरश दीन्ह दिव्यदेवी गुरु, अनुमोदन श्री विवेकानंदन।
तुलसी नयन सफल हनू, जो दरश दिए रघुवर आनंदन॥
मोहे आज बचा लो मेरे गुरु, जराय मुझे यह दावानलन...

ग्यान ध्यान ना समझ सकूँ, कोसों दूर हैं भक्तावन।
पायूँ कैसे मैं सत्संग प्रभू, भक्ति ना मेरे समझावन॥
मोहे आज बचा लो मेरे गुरु, जराय मुझे यह दावानलन...

मूढ़मती ना ध्यान लगा प्रभू, लक्ष्य एक बस स्वार्थापन।
दूर करो अग्यान मेरे गुरु, आया है सिडी तेरे द्वारापन॥
मोहे आज बचा लो मेरे गुरु, जराय मुझे यह दावानलन...